# हिन्दी

## निबन्ध और पत्र-लेखन

(FOR HIGH SCHOOL & COLLEGE STUDENTS)

# HINDI ESSAYS & LETTERS

K. RUBEN M.A.,

# हिन्दी निबन्ध और पत्र लेखन

## Hindi Essays & Letters

K. RUBEN, M.A.

NAVARATNA BOOK HOUSE
28-29-20, Rahiman St., Arundalpet,
VIJAYAWADA - 520 002.

# हिन्दी निबन्ध और पत्र लेखन
# HINDI ESSAYS & LETTERS

Writer :
**K. RUBEN,** M.A.,

Cover Design :
**Devi Prasad**

© Navaratna Book House
**Ph : 2432813**
**Cell : 9440313113**

DTP :
**Sri Surya Graphics**

**Rs. : 60.00**

Printed :
**Sri Chaitanya Offset Printers,**
Vijayawada - 520 002.

# विषय सूची

## भाग – I : इन्टरमीडियट निबन्ध


1. समय का सदुपयोग
2. हिन्ही राष्ट्र भाषा के रूप में
3. युगपुरुष गाँधी
4. पुस्तकालय
5. एक सुन्दर दृश्य
6. काश्मीर की यात्रा
7. विज्ञान से लाभ और हानि
8. समाचार पत्र
9. विद्यार्थी और अनुशासन
10. दीपावली
11. देशाटन
12. पंडित जवाहरलाल नेहरू
13. कुटीर उद्योग
14. विद्यार्थी जीवन
15. स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त)
16. वार्षिकोत्सव
17. दशहरा
18. गणतंत्र दिवस (26 जनवरी)
19. ग्राम सुधार
20. मेरा प्रिय खेल
21. दूर दर्शन
22. भ्रष्टाचार और उसकी रोकथाम
23. जन्मभूमि कार्यक्रम में छात्रों का योगदान
24. भारत की भावात्मक एकता
25. साक्षरता का प्रचार

## भाग - II : डिग्री निबन्ध

26. मेरे प्रिय कवि - तुलसीदास
27. मेरे प्रिय लेखक - प्रेमचंद
28. मेरी प्रिय नेत्री - श्रीमति इंदिरा गाँधी
29. मेरी प्रिय पुस्तक - साकेत
30. आतंकवाद
31. सिनेमा ओर समाज
32. साहित्य और समाज
33. मनोरंजन के साधन
34. छात्र और राजनीति
35. जनसंख्या की रोकथाम
36. दहेजप्रथा
37. नागरिकों के मूल अधिकार
38. भारत की सामाजिक समस्यायें
39. भारत में बेकारी की समस्या
40. प्रजातंत्र और तानाशाही
41. भारत की विदेशी नीति
42. विश्वशांति
43. महिला आरक्षण
44. सह शिक्षा
45. पर्यावरण और प्रदूषण
46. अंतरिक्ष अनुसंधान और भारत
47. ललित कलाएँ
48. हमारे त्योहार
49. जल यज्ञ और भूमि यज्ञ
50. संयुक्त राष्ट्रसंघ
51. एशियाई खेल
52. ओलिम्पिक खेल

## भाग - I : इन्टरमीडियट निबन्ध

# 1. समय का सदुपयोग

**रुपरेखा :**

1. प्रस्तावना
2. समय की अमूल्यता
3. हम समय का दुरुपयोग करते है
4. समय का सदुपयोग करना
5. लाभ
6. उपसंहार

समय सुष्टि का अत्यंत मूल्यवान वस्तु है । पर खेद की बात है कि हम समय को अधिक नष्ट करते है । उसकी अमूल्यता पर ध्यान नही देते । विद्वानों का कहना है कि समय ही धन है । समय ही सोना है । वह किसी के लिए रुकनेवाला नही है । समय के प्रवाह में बह जाना सबों के लिए अनिवार्य है । राजा, महाराजा, संत, नेता, महावीर और महापुरुष कालगर्भ में विलीन हो गये । बीता हुआ समय और छोडा हुआ बाण वापस नहीं आते । विज्ञ पुरुष समय का मूल्य पहचान कर उसका सदुपयोग करता है । दुसरों की भलाई करता है । अपना ज्ञान बढा लेता है । समाज और देश की सेवा करता है । विश्वशांति और विश्व-कल्याण के लिए निरन्तर प्रयत्न करता है । जो व्यक्ति ठीक समय पर काम नहीं करता यह बाद में जरूर पश्चात्ताप करेगा ।

अक्सर हम देखते है कि लोग समय को बेकार की बातों में, निरूपयोगी कामों में व्यर्थ करते है । छात्र पढाई छोड कर सिनेमा घरों में, बाजारों में गप्पे उडाते रहते हैं । फिजूल झगडों में सिर खपाते हैं । स्त्रियाँ अपना अधिकांश समय अनावश्यक बातें करने में व्यतीत करती हैं । इससे समय का दुरुपयोग तो होता है साथ साथ झगडे भी खडे होते हैं । जो व्यक्ति अपना समय व्यर्थ करता है । वह दूसरों का समय भी व्यर्थ करता है । ऐसे व्यक्ति समाज के लिए हानिकारक है ।

**समय का सदुपयोग करना :**

समय का सदुपयोग करना हर मनुष्य का प्रथम धर्म हैं । क्योंकि मानव जीवन का आधा भाग नींद में बीत जाता है । शेष भाग में भी बचपन और बुढापे से, अज्ञान और अशक्तता से हम कोई महान कार्य नही कर सकते । अत: यौवन काल में ही ज्ञान संपादन करना, जनता और देश की सेवा करना, कृषि-उद्योग आदि क्षेत्रों में तरक्की पाना संभव है । समय का सदुपयाग करने के लये कुछ नियमों का पालन करना चाहिये ।

**अ. समय की पाबंदी :** जो समय की पाबंदी रखता है वह अनेक महान कार्य कर सकता है । दूसरों का विशवास और आदर पाता है । उससे अलसत्व दूर भाग

जाता है । गांधीजी के समय की पाबन्दी सर्व विदित है । विश्व के महापुरुष और नेता समय के बडे पाबंद थे ।

**आ. समय का सदुपयोग करना :** उत्तम ग्रन्थों का अध्ययन करना, पंडितों की संगति, उपयोगी बातें करना, कर्तव्य पालन और समाजोपयोगी कार्यों में हाथ बांटना, ललित कलायें सीखना-इन कार्यों से समय का सदुपयोग होता है । (चोर, डाकू और ठग भी दिन-रात किसी काम में व्यस्त रकते हैं, पर उनके कार्य हानिकारक और दु:खदायक होते है ।)

**लाभ :** जो व्यक्ति समय का सदुपयोग करता है, वह लाभ पाता है । सुख पाता है । उसे कभी पश्तात्ताप करने का अवसर नहीं आता । जो विद्यार्थी पढता है, वह ज्ञान पाता है । जो व्यापारी मन लगाकर व्यापार करता है, वह लाभ पाता है । जो क्रम से अभ्यास करता है वह अच्छा खिलाडी बनता है । जो नेता ठीक समय पर जनता की मदद करता है, वह नाम पाता है ।

**उपसंहार :** अन्त में कह सकते है कि समय सबसे मूल्यवान वस्तु है । उसके सदुपयोग करने से अनेक लाभ होते है । उसके दुरुपयोग करने से अनेक कष्ट और नष्ट होते है ।

## 2. हिन्दी राष्ट्र-भाषा के रूप में

जो भाषा देश के अधिकांश लोगों से बोली जाती है और जिसे अधिकतर लोग समझ सकते है वह राष्ट्रभाषा कहलाती है । अंग्रेजों के जमाने में अंग्रेजी हमारी राज भाषा रही । उसी भाषा में सरकार के आदेश निकलते थे । लोग उसी भाषा में पत्र व्यवहार करते थे । अंग्रेजी भाषा का प्रसार और प्रभाव अधिक रहा । अत: कई लोगों का विचार था कि अंग्रेजी को ही राष्ट्र भाषा का पद मिलना चाहिये ।

अंग्रेंजी एक सम्पन्न भाषा है । वह अन्तर्राष्ट्रीय भाषा है । विज्ञान, गणित, कानून जैसे गंम्भीर विषयों पर अनेक उत्तम पुस्तकें केवल अंग्रेजी में मिल रही है । फिर भी भारत जैसे एक स्वतंत्र देश की राष्ट्र भाषा या राजभाषा के पद पर अंग्रेजी को बिठाना उचित नही होता । अंग्रेजी एक परायी भाषा है । दो सौ वर्षो के प्रचार के बाद भी केवल एक प्रतिशत जनता अंग्रेजी से परिचय पा सकी । हमारे लिये, हमारी सभ्यता, संस्कृति एवं इतिहास से सम्बन्धित देशी भाषा हिन्दी ही राष्ट्रभाषा बनने योग्य है ।

पूज्य गांधी और अन्य नेताओं ने खूब सोच विचार कर हिन्दी को राष्ट्र भाषा घोषित किया है । हमारे संविधान में भी हिन्दी को राजभाषा का स्थान दिया गया है । इसके कारण निम्नलिखित है ।

**अ.** हिन्दी भारत की भाषा है । यह भारतीय संस्कृति से जुडी हुयी है । भारतीय भाषाओं से, पुराणों से, इतिहास तथा संस्कृति से इसका घनिष्ट संबन्ध है । इसमें भारतीय जनता के विश्वास तथा आचार-विचार प्रतिबिंबित होते है ।

**आ.** भारत के करीब एक तिहाई (34 करोड) लोगों की मातृभाषा हिन्दी है । मराठी, गुजराती, राजस्थानी, पंजाबी, भाषाएँ हिन्दी से मिलती जुलती है । वहाँ के लोग हिन्दी बोल सकते हैं और समझ सकते है । देश के अधिकांश लोगों की भाषा होने के कारण यह राष्ट्र भाषा बनने योग्य है ।

**इ.** छन्द, व्याकरण, अलंकार आदि के विषय में दक्षिण-भारत की भाषायें भी मिलती जुलती है । हिन्दी में अनेक संस्कृत शब्द हैं । अत: हिन्दी सीखना और समझना आसान है ।

**ई.** यह एक सरल, सरस और सुन्दर भाषा है ।

**उ.** इसमें संस्कृत के अलावा अरबी, फारसी, अंग्रेजी जैसी भाषाओं के शब्द भी हैं । अत: इसे आसानी से समझ सकते हैं ।

**ऊ.** कबीर, सूर, तुलसी, जैसे अनेक संत और महापुरुषों ने इस भाषा को सम्पन्न बनाया । बीजक, सूर-सागर, तुलसी रामायण जैसे अनेक उत्तम ग्रन्थ इस भाषा में है । यह एक प्राचीन भाषा है ।

**ऋ.** यह एक वैज्ञानिक और सरल भाषा है । इसे पढने में, लिखने में और बोलने मे कोई कठिनाई नहीं है ।

**ए.** साहित्य के आलावा अर्थशास्त्र भूगोल, इतिहास जैसे विषयों पर भी अनेक उत्तम ग्रन्थ हिन्दी में निकल रहे है ।

रूस, चीन, जापान, जर्मनी देशों में अंग्रेजी के बिना ही बडी वैज्ञानिक प्रगति हुयी है । सारी वैज्ञानिक प्रगति केवल अंग्रेजी भाषा पर निर्भर है - ऐसा कहना उचित नहीं होगा उक्त कारणों से कहा जा सकता है कि हिन्दी हमारी राष्ट्र भाषा बनने योग्य है । **(मार्च 1999, मार्च 2000)**

# 3. युगपुरुष गाँधी

महात्मा गाँधी सचमुच एक युगपुरुष हैं । राम, कृष्ण, बुद्ध आदि महापुरुषों में और गाँधीजी में बडा अन्तर है । गीता में कहा गया है कि जब धर्म का पतन और अधर्म का उत्थान होता है तब धर्म-रक्षा के लिए भगवान जन्म लेता है । गाँधी ने साबित किया कि जाति, धर्म, देश और रंग अलग होकर भी सब मनुष्य शांतिपूर्ण सह जीवन बिता सकते है । क्योंकि सारी मानव-जाति एक है ।

गाँधीजी का जन्म सन् 1869 अक्तूबर 2ई को गुजरात राज्क के पोरबन्दर में हुआ था । उनके पिता करमचंद थे और माता पुतलीबाई थी ।

गाँधीजी की पत्नी कस्तूरबाई थीं । वे एक आदर्श पत्नी और आदर्श नारी थीं ।

गाँधीजी का जीवन सत्यम, शिवम और सुन्दरम का मिश्रण था । उनका जीवन सच्चा था । उनके सभी काम सीधे-साधे थे । नियम बद्ध थे । उनकी वेष-भूषा सरल थी । उनका आदर्श जीवन ही एक संदेश है ।

गाँधीजी का दौनिक जीवन और दैनिक कार्यक्रम मानव जाति के लिए आदर्श प्राय है । उनके विचार, उनकी बातें और उनके कार्य तीनों शुद्ध थे । त्रिकरण

शुद्धि ही उनकी सफलता की कुंजी थी । गाँधीजी हमेशा सत्य का पक्ष लेते थे । उसकी विजय केलिए सत्यग्राह द्वारा लडते थे । उस लडाई का प्रधान अस्त्र था अहिंसा । उन्होंने सत्य और अहिंसा को अस्त्र बनाकर भारत को स्वतन्त्र बनाया । वे गीता के सच्चे अनुयायी थे । वे निस्वार्थ सेवा का मूल्य जानते थे । वे एक कर्मयोगी थे । वे सब काम समान श्रद्धा से करते थे । झाडू करने से लेकर वायसराय से मिलने तक समान प्राधान्य देते थे ।

उन्होंने दलित, पीडित मानव-जाति की सेवा में अपना जीवन अर्पित किया था । विश्वाशांति के लिए वे शहीद हो गये । वे भारत को सभी विषयों में समुज्वल बनाना चाहते थे । वे बडे यन्त्रों के विरोधी थे । वे मानते थे कि बडे यन्त्र, धनवानों को अधिक धनवान बनाते है । बेकारी बढाते है । कुटीर उद्योग हमारे देश केलिए बहुत ही उपयुक्त है क्यों कि कुटीर उद्योग करोडों गरीबों को काम और भोजन दिलाते है । गाँधीजी बेकारी और गरीबी को दूर करना चाहते थे ।

हरिजन उध्दार, हिन्दी प्रचार, खादी प्रचार, सांप्रदायिक, एकता, अपरिग्रह, समाज-सेवा जैसे सभी विषयों को वे समान स्थान देते थे । वे कथनी की अपेक्षा करनी को प्रमुख स्थान देते थे ।

गाँधीजी ने सुप्त भारत जाति को जगाया । उसमें नयी चेतना भर दी । नया जीवन दिया । गाँधीजी सभी भारत वासियों के अत्यनत प्रीतिपात्र थे । वे सारे विश्व के मित्र थे । विश्व कल्याण उनका ध्येय था । नेहरू, पटेल, प्रकाशम पंतुलु, नेताजी, टैगोर आदि महान व्यक्ति भी उनका आदर करते थे । उनकी कीर्ति युगों तक उज्वल रहेगी ।

उनका आदर्श जीवन भारत वासियों को ही नहीं संपूर्ण मानव जाति को मार्गदर्शक रहेगा । **(अक्तूबर 1983)**

## 4. पुस्तकालय

जहाँ पढने के लिए पुस्तकें रखी जाती है उस स्थान को पुस्तकालय कहते है । प्राचीन काल में तालपत्र ग्रन्थ मौजूद थे । उन पर लिखना और उनको सुरक्षित रखना बडा कठिन कार्य होता था । इसलिए उत्तम ग्रन्थ केवल राजाओं तथा जमींदारों के यहाँ उपलब्ध होते थे । कागज तथा मुद्रणायन्त्र के प्रचार से लाखों पुस्तकें कम समय में प्रकाशित हो रही है । अत: अच्छी अच्छी पुस्तकें पढने का सौभाग्य साधारण जनता के लिये भी मिला ।

वर्तमान काल में पुस्तकालयों का प्रचार बहुत अधिक है । वे जनता की बडी सेवा करते है । पुस्तकालयों में जाने की आदत एक अच्छी आदत है । पुस्तकालय चार प्रकार के होते है ।

**अ)** निजी, **आ)** विद्यालयो संस्याओं के, **इ)** सार्वजनिक तथा **ई)** संचार पुस्तकालय जनता की सेवा करते हैं । निजी पुस्तकालय एक व्यक्ति और उसके परिवार के

लिए उपयोगी है । स्कूलों के पुस्तकालय वहाँ के छात्र तथा अध्यापकों के उपयोगार्थ होते है । सार्वजनिक पुस्तकालय सबके लिए उपयेगी हैं । उनमें जाकर हर कोई अपना मनचाहे पुस्तक पढ सकता है । आजकल संचार पुस्तकालय भी जनता की सेवा करते है । निश्चित समय पर मोटर गाडी निश्चित स्थान पर आती है । लोग उसमें से पुस्तक लेकर लाभ उठा सकते है । संचार पुस्तकालय महिलाओं तथा ग्रामीणों के लिये बहुत उपयोगी है ।

**लाभ :** पुस्तकालयों में हजारों पुस्तकें रखी जाती हैं । वे विविध विषयों से सम्बन्धित होती है । पाठक वहाँ जाकर आवश्यक पुस्तकें पढ सकते है । नगरों में कुछ ग्रन्थालय ऐसे है जिनमें लाखों पुस्तकें होती है। हर एक व्यक्ति सभी आवश्यक पुस्तकें खरीद नहीं सकता । लेकिन पुस्तकालयों में जाकर पढ सकता है । छात्र, अध्यापक, वकील, इजनीयर, डाक्टर, व्यापारी, किसान, बच्चे तथा बूढों के लिए पुस्तकालय बहुत उपयोगी है । छात्रों के लिए भी पुस्तकालय अत्यन्त प्रयोजनकारी है ।

प्राचीन काल में नलंदा और तक्षशिला के विश्वविद्यालयों में हजारों उत्तम ग्रंथ थे। तंजाऊर का सरस्वती महल दक्षिण भारत का अति प्राचीन ग्रंथालय है । कलकत्ता और हैदराबाद के केन्द्रीय ग्रंथालय मशहूर है । रोम नगर का वाटिकन ग्रंथालय लंदन का ब्रिटिश म्यूजियम ग्रंथालय अमेरीका का कांग्रेस ग्रंथालय मास्को नगर का राष्ट्रीय ग्रंथालय विश्व विख्यात है ।

लेखकों के लिए तो पुस्तकालय उत्यंन्त उपयोगी हैं । वहाँ वे प्रसिद्ध लेखकों के अनेक ग्रन्थ पढ कर ज्ञान वृद्धि कर सकते है । साहित्य, अर्थशास्त्र, विज्ञान, इतिहास, गणित, भूगोल, समाज शास्त्र जैसे विविध विषयों पर अच्छी अच्छी पुस्तकें पुस्तकालय में होती है । इनके अलावा ताल पत्र ग्रन्थ, प्राचीन काव्य ग्रन्थ, ताम्रपत्र भी पुस्तकालयों में प्राप्त होते है । पुस्तकों के अलावा विविध समाचार पत्र भी वहाँ मिलते है जिनको पढ़ कर लोग दैनंदित समाचार जान पाते है ।

कुछ रूपये अमानत के रूप में देकर पुस्तकें घर लाकर भी पढ सकते है । यह सुविधा औरतों तता बूढों के लिये बहुत लाभदायक है । इतने प्रयोजनों की वजह से ही आजकल सरकार अनेक पुस्तकालय खोल रही है ।

**नष्ट :** पुस्तकालय मे अच्छी और उपयोगी पुस्तकें रखने का कर्तव्य संचालकों पर है । हिंसा तथा अशिष्ट बातों से भरी पुस्तकें पाठ कों पर बुरा प्रभाव डालती है । अत: उनको पुस्तकालयों में नहीं रखना चाहिये ।

पुस्तकालय शिक्षित लोगों के समय का सदुपयोग करते है । उनकी संख्या बढाने की आवश्यकता है ।

**(इंटर – मार्च 1999, डिग्री – सितम्बर 2000)**

# 5. एक सुन्दर दृश्य (नागार्जुन सागर)

कई वर्षों तक हमारा देश विदेशी शासकों के अधीन में रहा । देश की उन्नति से भी अपना प्रयोजन शासकों का प्रधान लक्ष्य रहा । अत: देश की सर्वतोमुखी उन्नति नही हो पायी । 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ । तब से देश की सर्वतोमुखी उन्नति पर ध्यान दिया गया । खास कर खेती तथा सिंचाई की उन्नति पर जोर दिया गया । नागार्जुन सागर इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए निर्मित एक बृहत बाँध है ।

नागार्जुन सागर दक्षिण भारत का बडा बाँध है । एशिया महाद्वीप के बडे बाँधो में यह भी एक है । यह कृष्णा नदी पर बना है । यह गुंटूर जिले में एलेश्वर नामक गाँव के पास है । यह हैदराबाद नगर से 100 मील की दूरीपर है । 1955 में इसका शिलान्यास करते हुए पण्डित नेहरू ने कहा ''यह भारत का नया तीर्थ है । इसके दर्शनार्थ रोज हजारों यात्री इस पुण्यस्थल पर आयेंगे''। नेहरूजी का कथन सच निकला । आजकल इस नये तीर्थ के दर्शनार्थ रोज हजारों यात्री आया करते है ।

यह बाँध दो पहाडों के बीज में बना है । इसकी ऊँचाई 112 मीटर और लम्बाई 1450 मीटर है । इसके पानी से 35 लाख एकड भूमि सिंचाई योग्य बनेगी 130 लाख टन अधिक अनाज अत्पन्न होगा । बाँध के बनने से एक महान जलाशय बना है । वह 120 मीर लम्बाचौडा है । इस बाँध का निर्माण भारतीय इंजनीयरों की कार्यकुशलता का उत्तम उदाहरण है । इस बाँध से दो बडी नहरे खोदी गयी है । दाहिनी ओर 444 किलोमीटर लम्बी जवाहर नहर और बाई ओर 225 कि.मी. लम्बी लाल बहादूर नहर खोदी गयी । इन नहरों द्वारा खेती के लिए आवश्यक पानी मिलेगा।

''नागार्जुन सागर जंगल तथा पहाडों के बीच में निर्मित है । अत: वहाँ का दृश्य अत्यन्त सुन्दर है । विशाल जलाशय, बाँध पर से कूदती हुयी जल धारा और सफेद फेन देखते ही बनते हैं । बाँध के पानी से बिजली की उत्पत्ति भी हो रही है । बाँध के पास सुन्दर उपवन निर्मित हैं । उनमें तरह तरह के पेड पौधे लगे है । उनके रंग बिरंगे फूल यात्रियों को आराम और आनंद देते है । वहाँ एक नाव है जो यात्रियों को नंदिकोंडा तक ले जाती है ।''

जहाँ बाँध का निर्माण हुआ वह प्रदेश प्राचीन काल में नंदिकोंडा नाम से विख्यात था । नंदिकोंडा शातवाहन राजाओं के काल में एक प्रसिद्ध बौद्ध विहार था । उसके प्रधान आचार्य थे नागार्जुन । वे विश्व विख्यात आचार्य थे । वे एक मशहूर रसायन शास्त्रज्ञ भी थे । उनके समय में वह प्रदेश हजारों छात्रों से, भिन्न भिन्न शिक्षा केन्द्रों से और तरह तरह के पेड पौधों से सुशोभित था । वहाँ चिकित्सा, तर्क, बौद्ध दर्शन, खगोल शास्त्र, शिल्पकला, चित्रकला जैसे अनेक विषयों की शिक्षा दी जाती थी । नंदिकोंडा ने प्राचीनकाल में विश्व के सभी देशें के ज्ञानाधिकों को आकर्षित किया। अब वहाँ जो बाँध बना है वह भी विविध दोशों के यात्रियों को आकृष्ट कर रहा है ।

नागार्जुन सागर भारत की अर्थिक उन्नति में और अधिक अन्न उपजाने में प्रमुख स्थान रखता है । किसानों के लिये तो यह एक वरदान है । वे पहले केवल वर्षा पर आधारित हात थे । अब उन्हें आकाश की ओर निराशा भरे नेत्रों से देखने की जरूरत नहीं है । वे साल में दो या तीन बार फसलें उत्पन्न कर सकते हैं ।

नागार्जुन सागर न केवल एक यात्रा केन्द्र है बल्कि एक अत्यन्त उपयोगी बाँध है । यह महान बाँध भारत के लाखों हेक्टार जमीन को उपजाऊ बना रहा है । पहले वहां जंगल ही जंगल था । अब वहाँ मंगल ही मंगल है ।

# 6. काश्मीर की यात्रा

मैं गत महीने में अपने माँ-बाप तथा बाई बहन के साथ काशमीर की यात्रा पर गया । हम सब यात्रियों की बस में गये । हमारे साथ हमारे नगर के 50 अन्य यात्री भी थे । जम्मू तक का प्रदेश नदी नालों से और हरे-भरे खेतों से बहुत ही मनोहर था । हम खेतों तथा मैदानों को देखकर बहुत प्रसन्न हुए । वहाँ के पहाड बरफ ने ढके हैं । हिम किरीट से शोभित हिमालय पहाडों की अपूर्व शोभा देखकर हम प्रफुल्लित हुये । सारा प्रदेश और वहाँ की सुन्दर प्रकृति देखकर हम प्रभावित हुये ।

लोग कहते हैं कि काश्मीर पृथ्वी का स्वर्ग है । वह एक सुसज्जित राजकुमारी के सामान सुन्दर और मनोहर है । काशमीर की औरतें बहुत सुन्दर होती हैं । उनकी वेषभूषा निराली होती है । सारे विश्व के यात्री काश्मीर की अनुपम शोभा देखने आते है । वे यहाँ के हिमाच्छादित पर्वत प्रदेश, सुन्दर बगीचे, कलकलनाद करने वाले पहाडी झरने, फूलों से सुशोभित घाटियाँ देखकर अपने आप को भूल जाते है । हम पहलगाँव नामक स्थान पर गये । वहाँ की घाटी फूलों से भरी हुयी थी । जमीन नहीं दिखाई पडती थी । काश्मीर के शालिमार बाग और निशात बाग अत्यंत सुन्दर हैं । वे बहीचे मुगल बादशाह जहंगीर के जमाने से विश्व विख्यात है । काशमीर में अधिक सरदी पडती है । नदी नालों का पानी भी रातों में जम जाता है । घरों की छतें और पेडों की डालियाँ भी बरफसे ढक जाती है । काशमीर में झरनों का पानी बहुत निर्मल और अधिक ठंडा होता है ।

श्रीनगर के पास ही एक सुन्दर झील है । उसका नाम डालझील है । उसपर यात्री लोग छोटी नावों में सैर करते है । डाल झील पर अनेक नावें होती है । जो ''हाउसबोट'' नाम से प्रसिद्ध हैं । उनमें यात्रियों के ठहरने के लिये सब सुविधायें होती है । हमने एक फेरी लेकर डाल झील की सैर की ।

काशमीर की वस्तुयें बहुत सुन्दर होती है । वे सारे विश्व में प्रसिद्ध हैं । ऊन के दुशाले, कम्बल और स्वेटर बहुत सुंदर और अच्छे किस्म के होते हैं । माँ और बहन ने दुशालें खरीदे तो मैं और पिताजी ने स्वेटर खरीदे । काशमीर में तरह तरह की सुन्दर वस्तुयें बिकती है । काशमीर प्रकृति देवी की प्यारी पुत्री है । उसके मनोरम दृश्य जिंदगी भर याद आते रहते है । हमारी काशमीर यात्रा अनेक मधुर यादों से और विचित्र अनुभवों से बीती ।

# 7. विज्ञान से लाभ और हानि

ज्ञान का मानसपुत्र विज्ञान है और मानस पुत्री कला है । आज कल विज्ञान इतना विस्तृत, शक्तिशाली और प्रभावशाली बन गया है कि उसका निर्माता मानव तक उसका दास बन गया है ।

वर्तमान संसार को बिजली, मुद्रणायंत्र, यातायात के साधन मनोरंजन के साधन, रोग निरोध की टीकायें और बडी बडी मशीनें और हजारों छोटे-मोटे आविष्कार संचालित करते है । बिजली मानव के आविष्कारों में सर्वोत्तम और अधिक प्रयोजनकारी है । हमारे जीवनके हर क्षेत्र में इसकी लीला दृष्टिगोचर होती है । बिजली के कारण हमारे घर, गाँव और नगर रोशनी से जगमगा रहे है । बडे बडे कारखाने चल रहे है । रेडियो, तार, टेलिफोन, सिनेमा और टेलिविजन काम करते है । आजकाल रेलगाडीयाँ भी बिजली से चलती है । सरदी को दूर करने के लिये रूम हीटर, गरमी में ताप मिटाने के लिये शीतल यंत्र बिजली द्वारा ही चलते है ।

बिजली औद्योगिक उन्नति में कई करामात कर रही है । मुद्रणा यंत्र के कारण कई समाचार पत्र और लाखों पुस्तकें प्रकाशित हो रहे है जो बुद्धि के विकास में प्रमुख योग देते हैं । आजकल चेचक, हैजा, प्लेग, चेचक जैसे रोग मिट गये हैं । टीका इन भयंकर रोगों को मनुष्ट से दूर रखती है । चीर-फाड (आपरेशन) के क्षेत्र में तो अद्भुत प्रगति हुयी है । हृदय को बदलना, प्लास्टिक सर्जरी, एक्सरे, रेडियम चिकित्सा जैसी महान पद्धतियाँ अमल में आयी हैं । एक्सरे यंत्र शरीर के भीतर के रोग पहचान ने में अद्भुत सहयोग दे रहा है ।

यातायात के साधन दूरी तथा समय को कम कर रहे है । रेल, मोटर, जहाज और हवाई जहाजों में सफर करके हम सारे देश की और संसार की यात्रा कर सकते है । यातायात के साधनों ने मानव जीवन को सुखमय बनाया । व्यापार बढगया और दुनिया के राज्यों का परस्पर सम्बन्ध भी बढगया । युद्ध, अकाल और बाढ के समय यातायात के साधन बहुत ही उपयोगी है ।

विज्ञान ने मानव को मनोरंजन के अनेक साधन प्रदान किये । सिनेमा उनमें सर्व प्रमुख है । ग्रामफोन, रेडियो, टेप रिकार्डर, टेलिविजन, वीडियों जैसे साधन मनुष्य के शरीर को आराम और मनको मनोरंजन देते हैं ।

कपडे, कागज, प्लास्टिक, सिगेरेट, चीनी जैसे पदार्थ बडे, बडे, यंत्रों के सहारे उत्पन्न किये जा रहे हैं । प्रयोगशालाओं में सैकडों दवायें तैयार हो रही है । बडे बडे बांध और कारखाने बनाये जा रहे हैं । इन सब विषयों में विज्ञान का हाथ रहा है ।

कृषि के क्षेत्र में विज्ञान से बडी सहायता मिल रही है । अधिक अन्न उपजाने के लिये किसान उत्तम औजार, उत्तम बीज और नयी पद्धतियाँ अमल में ला रहे है। फसलों को कीडे मकोडों तथा रोगों से बचाने वाली अनेक दवावों का

आविष्कार हुआ है । बाँधों, नालों तथा नलकूपों के द्वारा लाखों हेक्टार भूमि की सिंचाई का प्रबन्ध किया जा रहा है । विज्ञान की मदद से ही लोगों को भर पेट भोजन मिल रहा है ।

विज्ञान के द्वारा जितने प्रयोजन मानव जाति को हुये है उन सबका बयान करना कठिन है । विज्ञान ने अंधों को आंखों दी, बधिरों को श्रवणशक्ति दी । पंगु को पैर दिये, मनुष्य को पक्षी के समान उडने के और मछली के समान तैरने के साधन दिये । मानव जीवन के हर क्षेत्र में विज्ञान का हाथ है । मानव के उपयोग में आनेवाली हर चीज विज्ञान की देन है । कलम से खाट तक, साईकिल से राकेट तक उसकी देन है । आज का मानव चंद्रमा पर भी कदम रख कर अन्य ग्रहों पर अधिकार पाने के प्रयत्न में है ।

हानियाँ : विज्ञान ने अनेक हानिकारक पदार्थों का भी निर्माण किया । अमुबम, उदजनिबम, रोकेट मशीन गन, जंगी जहाज, युध्द विमान, टैंक, मिसैल्स जैसे भयानक मारणास्त्र और युद्ध सामाग्री मानव जाति को ज्वालामुखी के समान तडपा सकता है । मानव जाति का नाश करने के लिए एक से बढ कर एक अस्त्र बन रहा है । इन अस्त्रों को अपने पास रखकर राष्ट्र अपने को शक्ति शाली मान रहे हैं । विज्ञान के युग में मानव भौतिकवादी बन गया है । ईश्वर पर धर्म तथा न्याय पर उसका विश्वास मिट गया । प्राणियों का नाश कर ने वाली दवायें और मादक पदार्थ भी अधिक हो गये है । तेज चलने वाले यातायात के साधनों के कारण दुर्घटनायें भी अधिक हो गयीं । मानव हर बात के लिए मशीनों पर आधारित होने लगा । शरीर श्रम से भागने लगा । वह आलसी बन गया ।

उक्त बातों के आधार पर हम कह सकते है कि विज्ञान ने मानव को सुख दिया और दुख भी दिया । प्रथम और द्वितीय महासंग्रामों का जन-नष्ट इससे पहले कभी नहीं हुआ था । विज्ञान उस दियासालाई के समान है जिसे जलाकर रसोई बना सकते है और घर जला सकते हैं । विज्ञान का अच्छा या बुरा परिणाम मानव स्वभाव पर आधारित है । मानव यदि विज्ञान का सदुपयोग करेगा तो यह पृथ्वी स्वर्ग बनेगा । विज्ञान का दुरुपयोग करेगा तो नरक बनेगा ।

**(डिग्री-सितम्बर 2000, 2001)**

**नोट :** विज्ञान वरदान है या अभिशाप प्रश्न के लिये भी यही निबन्ध लिखिए।

## 8. समाचार पत्र

देश विदेश के समाचार बताने वाले पत्र समाचार पत्र है । आजकल समाचार पत्रों का प्रचार और प्रभाव अधिक है । वे सरकार को खडाकर सकते है और गिरा सकते है । लोगों के विचार बदल सकते है । वे सरकार तथा जनता के लिये बहुत उपयोगी हैं । वे वर्तमान संसार रूपी रथ के चक्र है ।

16 वीं सदी में वेनिस नगर में सर्वथम समाचार पत्र प्रकाशित किया गया । भारत में अंग्रेजों के शासन केल में इन्डियन गेजेट प्रकाशित किया गया । 1818 में

**End of Preview.**

**Rest of the book can be read @**
**http://kinige.com/book/Hindi+Nibandh+Aur+Pathr+Lekhan**

* * *